ISSN 2349-3887

दोआबा

समय से संगत

वो नए ज़माने के हुक्मरान थे। सियासत और समाज दोनों ही उनके रौब से चलते थे। सूबे की सरकार से लेकर दिल्ली तक उनका दबदबा था। इलाक़े के ग़रीब अवाम के बीच उनकी हैसियत मुकम्मल 'सरकार' की थी। बस्ती के इर्द-गिर्द उनके इशारे क़ानून की हैसियत रखते थे। बस्ती के बड़े हाकिम से लेकर अदना मुंशी तक नौकर-चाकर की तरह उनके आगे सर झुकाते थे।

उनकी हुक्म-अदूली मौत के दरवाज़े खोलती थी।

इसीलिए जब उन्होंने पोशीदा तौर पर बस्ती के ख़ूबसूरत पहाड़ों को क्रशर-मशीन मालिकों के हवाले कर देने का फ़ैसला कर लिया, तो किसी को भी इसकी मुख़ालफ़त में उतरने की हिम्मत नहीं हुई। सब ने इसे 'क़िस्मत का खेल' मानकर तस्लीम कर लिया।

कहते हैं, बस्ती के ख़ूबसूरत पहाड़ों को डायनामाइट से उड़ाकर तोड़ देने और फिर उन्हें बड़ी-बड़ी मशीनों की मदद से छोटे-छोटे पत्थरों में बदल देने के कारोबार में लगे पूंजीशाहों ने इस काम में उनकी हिमायत हासिल करने के लिए अच्छी-ख़ासी रक़म चुकाई थी। बस्ती के आस-पास खेती की ज़मीन तो उनके नाम क़वाला हुई ही, पटना से दिल्ली तक कई बड़ी कोठियां भी वजूद में आ गईं। क्रशर-मशीनों से हासिल होने वाले मुनाफ़े में भी उनकी अच्छी हिस्सेदारी तय हुई।

'तीसरे पहर की स्मृतियां' से

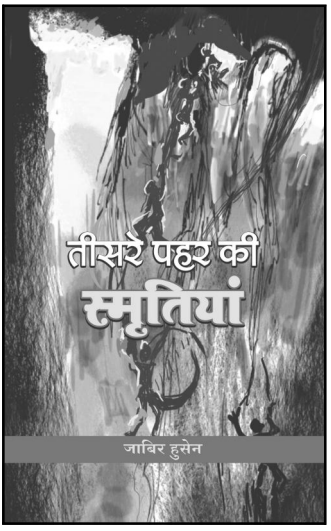

जनवरी-मार्च 2023

दोआबा

समय से संगत

दोआबा

समय से संगत

जनवरी-मार्च 2023

वर्ष 17 : अंक 44

आवरण चित्र : विशाखापत्तनम बोर्रा गुफा

आभार : देव लकड़ा और उनकी बेटी एकांता *(छत्तीसगढ़)*

रेखांकन : अनुप्रिया *(फरीदाबाद)*

मानद सहयोग

शहंशाह आलम

लता प्रासर, पवन कुमार, जावेद एक़बाल

प्रबंध

मोनिश हुसेन

कार्यालय : सुनील हेम्ब्रम

संपर्क

247 एम आई जी

लोहियानगर, पटना - 800 020

e-mail : doabapatna@gmail.com

मो.-08409044236

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाकीज़ा ऑफसेट

शाहगंज, पटना-800 006

मो.-09334116542

मूल्य : ₹150/- (डाक खर्च अलग)

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक का इन विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं।

संपादक : **जाबिर हुसेन**

मो.-09431602575

जनवरी-मार्च 2023

दोआबा

समय से संगत

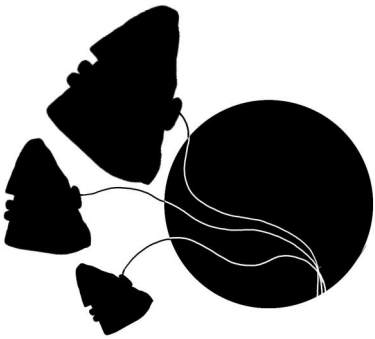

अनुक्रम

जाबिर हुसेन : अपनी बात / 05

ज़िंदा यादें

मधुरेश : संग-साथ / 08
शैलेन्द्र सागर : जीवनांगिनी ... / 40

रचना समय

विनीता बाडमेरा : मैं और वो / 60
पूर्णिमा सहारन : नई सुबह / 71
ममता सिंह : अधजगी आंखों की गुफ़्तगू / 79
मीनाक्षी सिंह : मुट्ठी भर एहसान / 92
भावना शेखर : सैलाब / 97
निर्देश निधि : पचासी पतझड़ / 104
रुचि भल्ला : तापोला / 109
जया आनंद : अपूर्ण कौन / 112
नरेश कुमार उदास : अंतिम अध्याय / 113
रामजी दास गुप्ता : मुजरिम / 119

कविता समय

हुमायूं आज़ाद (अनुवाद : उत्पल बैनर्जी) / 122
सिल्विया प्लाथ (अनुवाद : कुशाग्र मिश्र) / 125
पंखुरी सिन्हा / 127
ललन चतुर्वेदी / 132
अनुराधा ओस / 135
मालिनी गौतम / 138
वंदना भारती / 142
ज्योति स्पर्श / 147
लालदीप / 149

संवाद

शहंशाह आलम : कोलतार के पैर (पल्लवी शर्मा) / 154
कुमार अशोक : गांव के चौराहे पर (लालदीप) / 159

दोआबा-43 (अक्टूबर-दिसम्बर, 2022)

सुभाष राय : आप अकेले नहीं हैं, हम भी चल रहे हैं आपके साथ / 164
रास बिहारी गौड़ : समृद्ध होते पाठक की यात्रा / 167
हरीश पाठक : *दोआबा* की दृष्टि और दृष्टिकोण / 170
शहंशाह आलम : शब्दों का समुच्चयन / 171
सुहैल वहीद : सलीके से छपने वाली पत्रिका / 174
मनोज मोहन : गिरफ़्त में लेता अंक / 175
प्रीति सिन्हा : प्रत्येक धारा की रचनाओं से सज्जित / 176

जाबिर हुसेन

राष्ट्रपति के इन अधूरे संकेतों को कौन पूरा करेगा

जिन 'ज्ञानी-गुणी' लोगों ने राष्ट्रपति चुनाव के समय कुछ आपत्तिजनक और असभ्य टिप्पणियां करने की धृष्टता की थी, उनकी आंखें अवश्य ही उस दिन फटी रह गई होंगी, जब उन्होंने सत्ता-शीर्ष तथा न्याय-शिखर पर बैठे लोगों के सामने वर्तमान राष्ट्रपति को हिंदी-अंग्रेजी में भाषण देते हुए देखा-सुना होगा। सोशल मीडिया पर उनका भाषण आज भी सुरक्षित है, और शायद भावी पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रहेगा।

राष्ट्रपति जी ने आखिर ऐसा क्या कहा, जो देश के सामान्य लोगों के दिलो-दिमाग़ पर इतनी गहरी छाप छोड़ गया। उनके भाषण की आख़िरी पंक्तियां कुछ इस प्रकार थीं – 'मैंने अपना भाषण अधूरा छोड़ दिया। उसे तो आप विद्वान-जन देखेंगे ही, लेकिन मैंने जो नहीं कहा, आप कृपया उसे भी देखें-समझें।'

अवश्य ही, जो राष्ट्रपति जी ने नहीं कहा, वो उनकी कही बातों से कहीं ज्यादा मूल्यवान और मार्मिक थीं।

राष्ट्रपति जी ने अपनी ग्रामीण पृष्ठभूमि का ज़िक्र करते हुए अपना वक्तव्य आरंभ किया था। कैसी उनके छोटे-से गांव की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां थीं, स्कूली शिक्षा-व्यवस्था